Ankur's upload

किंग कॉमिक्स

मूल्य 7.00 संख्या 1

तलवार

UPloaded for RFN Community

जब से मानव ने विकास की दुनियां में कदम रखा, पीछे मुड़ कर नही देखा ! परिणाम ! जहां इंसान के कदम चाँद पर जा पहुंचे ! वहां कुछ अत्याधिक विकसित मानवशक्तियों ने महाविनाशी परमाणु बम तक बना लिये !

Uda

INVE

सम्पादन : विवेक मोह

1258

A. GOYAL

लेखक : तरुण कुमार 'वाही'

चित्रांकन : विनोद भारद्व

परमाणु बम विस्फोट के पश्चात् जापान के हिरोशिमा में आज भी यह इमारत (काल के गाल में समा गए) सैकड़ो-हजारों और शायद लाखों लोगों की याद में स्मारक के रुप में ज्यों की त्यों खड़ी है।

और परमाणु बम की त्रासदी के बाद आज कुछ वैज्ञानिक शक्ति जुटी हैं परमाणु बम की सक्रियता* से बचाव की रोकथाम में भी —

ALFA INVESTMENTS
Udaram Chowk Purani
SRIGANGANAGAR

प्रोफेसर भास्कर क
उनमे प्रमुख है, जो
भी अपने सहायक प्र
के साथ परमाणु प्रयो
कार्यरत-

प्रकाश !

* रेडियोधर्मी विकिरण !

...स्टॉप वाच की सुई के बारह पर पहुंचते ही मैं रेडियो-एक्टिव रेज को RATS CHAMBER में प्रेषित कर दूंगा ! BE CAREFULL!

सुपर प्रोटेक्टिव रेज प्रेषित करने के लिये भी मैं भी तैयार हूं सर !

इधर शहर के ताल कटोरा स्टेडियम के फ्लोर पर विद्युत से चल रहे थे खबर की उस गुड़िया के हाथ-पांव –

स्वर्णकप जूड़ो-कराटे कुंगफू प्रतियोगिता

उसके प्रत्येक रचनात्मक सुरक्षात्मक तरीको...

और वारों पर स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहटों से गूंज रहा था।

वाह!

मार्शल आर्ट की दुनिया में यह लड़की जरुर कुछ करेगी।

याईईं

स्वर्णकप के विजेता की घोषणा हो गयी।

मिस श्रीया भास्कर!

श्रीया..

श्रीया..

स्वर्ण कप मुबारक हो श्रीया !...

वाह! क्या दांव-पेंच दिखाए तुमने श्रीया अरे...

सबसे पहले यह खुशखबरी मैं अपने पापा को दूंगी।

उधर स्टॉप वाच की सुई बढ़ रही थी बारह के अंक की ओर-

टिक टिक

12 09 3 6

प्रयोग की सफलता-असफलता के लिये धाड़ धाड़ कर धड़क रहे थे प्रोफेसर भास्कर और प्रकाश भूते के हृदय।

और ठीक इसी पल 'भड़ाक' से खुला वह दरवाजा—

भड़ाक

ठीक यही वो पल था जबकि प्रोफेसर भास्कर और प्रकाश भूते उस नाब को घुमा चुके थे।

घातक रेडियो एक्टिव और सुपर प्रोटेक्टिव रेज गति के साथ बढी थी — RATS CHAMBER की ओर।

और साथ ही चेहरे पर बुरी तरह चौंकने वाले भाव लिये उछल कर पलट गये थे प्रोफेसर भास्कर और प्रकाश भूते।

कौन हो तुम?

तुम्हारी मौत प्रोफेसर भास्कर!

आंगतुक की उंगली ने हल्की सी हरकत की —

जिंग ऽऽ

आऽऽह

हत्यारे दरिन्दे!

उस एक पल ने प्रकाश को जैसे सब कुछ समझा दिया था

प्रोफेसर भास्कर की चुस्ती-फुर्ती से चूक गया निशाना लेकिन फिर भी गोली कंधे को चीरती चली गयी !

जिंग

आऽऽऽह

छनाक

धड़ाम

इसी पल कक्ष गूंज उठा तेज स्वरों से /

पिक..पिक पिक...

ओह माई गॉड ! सभी चूहे मारे गये, सुपर प्रोटेक्टिव रेज का प्रयोग असफल हो गया, और रेडियो एक्टिव रेज की अनियंत्रित मात्रा पहुंच गयी है चैम्बर में और...

विस्फोट से गूंज उठा कक्ष /

पूर कक्ष में लपलपा उठी रेडियो एक्टिव रेज—

कक्ष का कोना-कोना रेडियो धर्मिता से सराबोर हो गया।

और यह सब हुआ पलक झपकते।

रेडियो-एक्टिव 'धमाके' की तीव्रता से केवल क्षण भर को चुंधियायी थी आंगतुक की आंखे, और दूसरे क्षण—

आह!

तड़ तड़ तड़ तड़

उफ़!

और वह दृश्य देखती उन नीली आंखों में जैसे भूकम्प कौंध रहा था।

?

बादलों के टकराने का सा स्वर उत्पन्न करती हवा में तैर उठी श्रीया भास्कर।

वडाक!

आSSSईईईSS

बहुत ही अप्रत्याशित आक्रमण था —

धड़ाक

याईSSS

उफ़!

फुर्ती भी देखकर शरमा जाती उसकी चुस्ती को -

छलावा था छलावा—

धूम

आह..

और इतने समय में समझ चुका था आंगतुक उस बला के तेवर —

उफ़

इससे जल्दी ही पीछा छुडाना पड़ेगा मुझे !

दरवाजे की ओर जम्प तो लगाई आगंतुक ने, लेकिन दरवाजे पर बिल्ली के समान झपट पड़ी थी श्रीया भास्कर —

धड़ाक

तीव्र गति से दरवाजे से टकराया आंगतुक-

धड़ाक

उफ!

और-

आंगतुक ने पूरी ताकत के साथ वहां पड़ा स्टूल उठा कर श्रीया पर खींच मारा-

तड़ाक

आह!

क्षण भर को लड़खड़ाई श्रीया।

और उस क्षण भर में कक्ष से बाहर निकलता चला गया आंगतुक।

उफ! लड़की है या बला!

125

क्षण भर बाद ही उस विशेष द्वार से आगंतुक के पीछे ही बाहर निकली श्रीया, लेकिन

कहां गया मेरे पापा और प्रकाश का हत्यारा

शीघ्रता के साथ वापस लौट पड़ी-श्रीया।

जान अभी बाकी थी प्रोफेसर भास्कर में –

उफ पापा ! वह कौन था पापा ? आप उसे जानते हैं क्या ?

आह!

श्री...श्रीया ! मेरी बच्ची ! म.. मेरा प्रयोग... आह... असफल हो गया है ।... किन्तु मेरी आज तक की मेहनत पूरी तरह से व्यर्थ नहीं हुई ।

सुपर प्रोटेक्टिव रेज ४० प्रतिशत तक सफल हुई है, रेडियो एक्टिव को खत्म करने में । अगर.. अगर इस रिसर्च को मेरे फार्मूलों के आधार पर भारत के वैज्ञानिक जारी रखें तो एक दिन सफलता निश्चित है ...

ध्यान से सुनो बेटी ! उस.. उस ट्यूब की पट्टी के बायें हिस्से के नीचे एक माइक्रोफिल्म छिपी है । उसमें मेरी आज तक की पूरी रिसर्च... सफलताएं ... असफलताएं.. प्रयोग.. आह !

इसी के साथ लुढक गयी प्रोफेसर भास्कर की गर्दन ।

पापाऽऽ

लिजा Ankur's Upload

और फिर —

पापा ! आंखें खोलिये पापा, यह देखिये ! स्वर्ण कप जूडो कराटे कुंगफू प्रतियोगिता का स्वर्ण कप जीत लायी हूं मैं !

पर वो आंखें तो अब हमेशा के लिये बन्द हो चुकी थीं !

और सहसा ही श्रीयां की कनपटियां सुरर्व होने लगी —

पापा! आपकी सौगन्ध ! आपके हत्यारे को मैं छोडूंगी नहीं।

पहले वह माइक्रो फिल्म जब्त करनी होगी मुझे !

और अचानक-

ओह, नहींsss

शीघ्र ही प्रोफेसर भास्कर की कोठी के तहखाने में बनी उस विशेष प्रयोगशाला में फैली रेडियो-एक्टिविटी को निष्क्रिय करने के लिये पहुंच चुके थे विशेषज्ञ —

वूऊऊऊऊऊ

इधर चमचमाती मारुति 1000 के साथ ही खतरे में पड़ा था कार ड्राईवर का भी अस्तित्व !

और कार ड्राईवर के सिर से बहता खून श्रीया भास्कर के वार के जबरदस्त होने की ही चुगली कर रहा था।

कौन है, ये लोग? और मुझसे क्या चाहते हैं?

घुर्र्र्र

खतरा अब सिर पर आ चुका था।

ओह! ये मेरा अपहरण करना चाहते हैं या...

पेशेवर हत्यारों की दुनिया में रंगा का नाम इज्जत से लिया जाता है। क्योंकि आज तक रंगा कभी अपने काम में असफल नहीं हुआ।

लड़ाक!

और अब ये मुझे अपने रास्ते से हटाने की चेष्टा करना चाहते हैं ताकि उनका एकलौता राज़दार भी खत्म हो जाये।

और ये लोग निश्चित रुप से उस रहस्यमय नकाबपोश के साथी हैं, जिसने मुझे प्रोफेसर भास्कर की हत्या का काम सौंपा था... ओफ्फ!

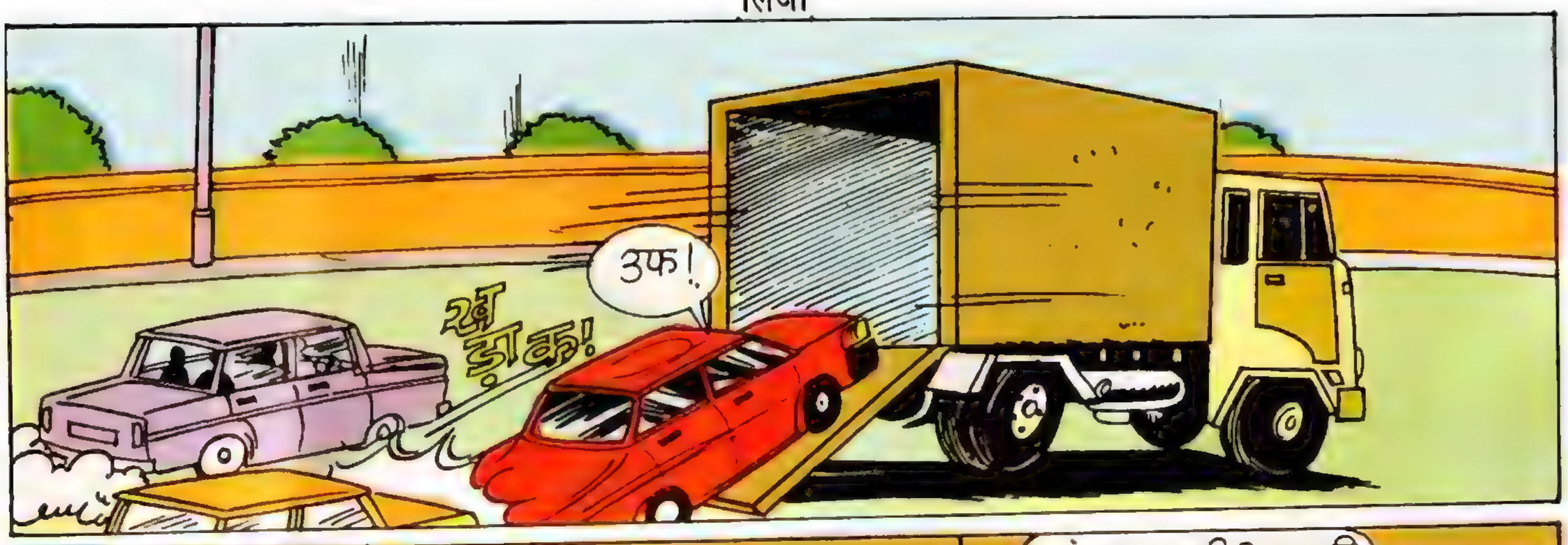
उफ!
धड़ाक!

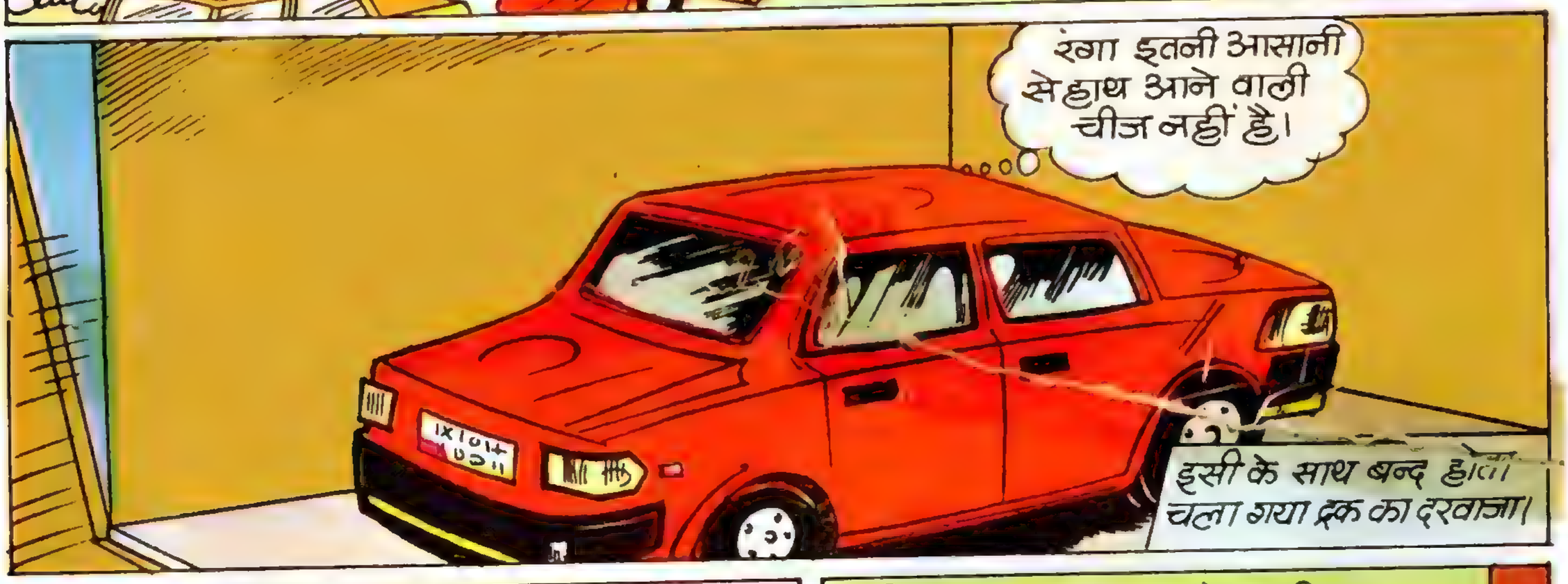
रंगा इतनी आसानी से हाथ आने वाली चीज नहीं है।
इसी के साथ बन्द होता चला गया ट्रक का दरवाजा।

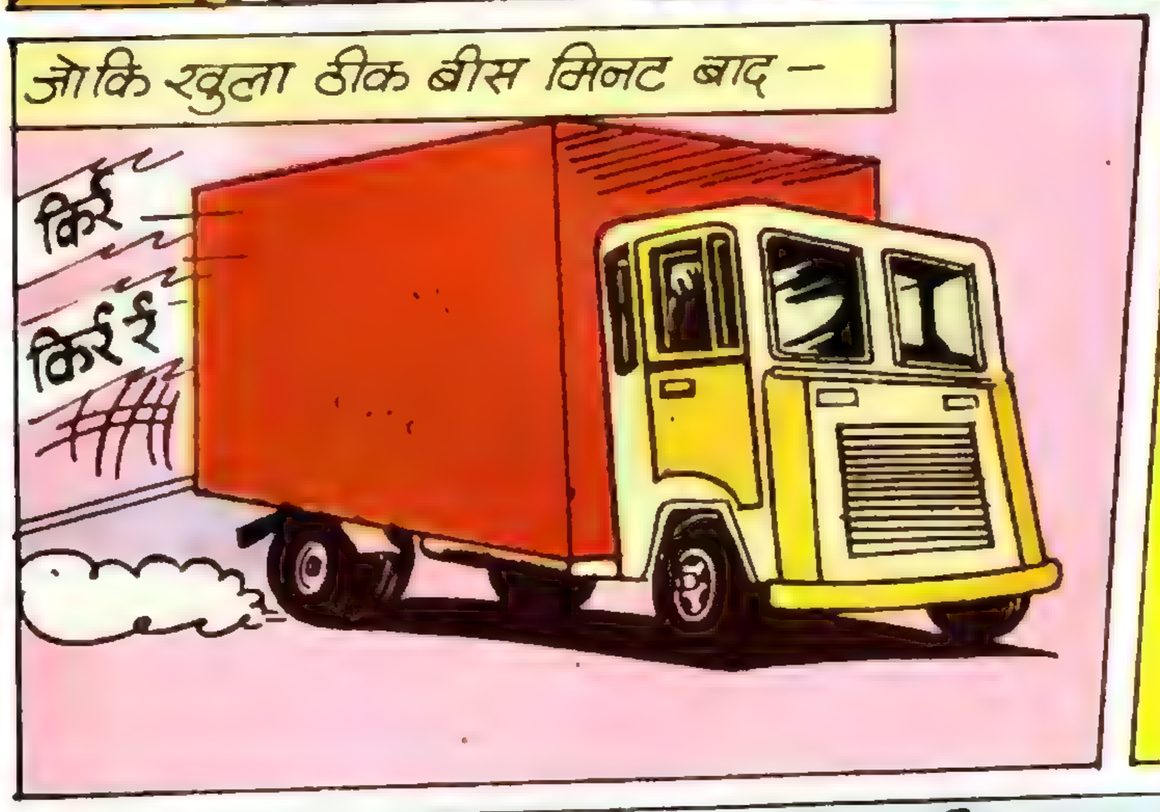
जो कि खुला ठीक बीस मिनट बाद –
किर्र
किर्र्र

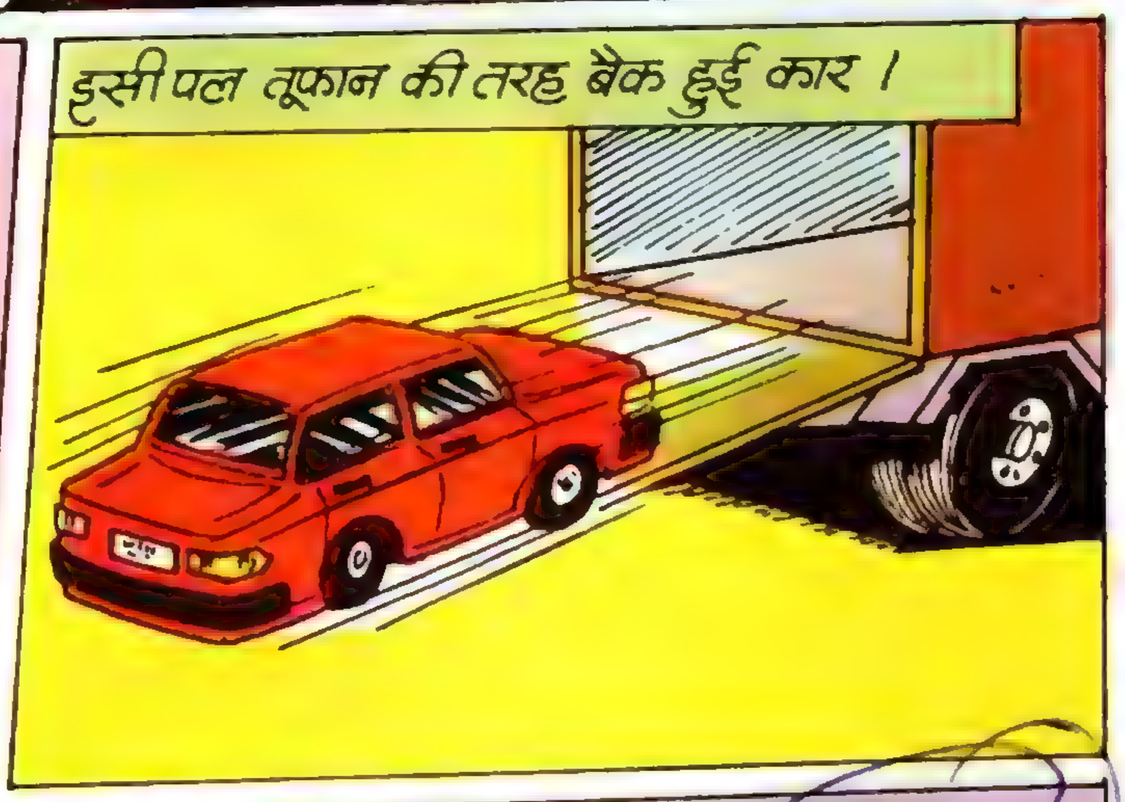
इसी पल तूफान की तरह बैक हुई कार।

सैकड़ों गोलियां पीछा करती चली गई उसकी कार का।
धनाके
धनाके
जिंग जिंग जिंग
जिंग जिंग जिंग

आह

घुर्रर्रर्रर्र

ओऽऽह!

भड़ाम

जिंग जिंग जिंग

घुर्र

आऽऽऽ

धड़ाक

और कार को बैक करने के प्रयास में इस बार चूक हो गई, परिणामस्वरूप-

ओह, नो!

धड़ाम

पेटियों के उस ढेर में समा गया रंगा ।

स्कूऽऽऽश

उसी पल कई गने उस तरफ उठ गई ।

लेकिन फायर की तुरन्त इजाजत न दी उस हाथ ने –

NO!

सामने आ गया वह रहस्यमय नकाबपोश –

मिस्टर रंगा! तुम्हारा यहां से बच निकलना असम्भव है। क्योंकि इस समय तुम किसी मामूली जगह पर नहीं...

... अमेरिकी खुफिया एजेन्सी C.I.A. के एक खुर्राट एजेन्ट के हैडक्वार्टर पर मौजूद हो, जिसे प्रोफेसर भास्कर के कत्ल के लिये यहां भेजा गया है ... क्योंकि हम नहीं चाहते थे कि प्रोफेसर भास्कर सुपर प्रोटेक्टिव रेज तैयार करके भारत को महाशक्ति की श्रेणी में ला खड़ा करे।...

... और अब यहां से जाने से पहले मैं तुम्हें भी खत्म करके तुम्हारी लाश को तेजाब में गला डालूंगा ताकि हमारा राज, राज ही रहे। हा हा हा !

पैसा लेकर दूसरों की हत्याएं करने में तो तुम कभी असफल नहीं हुये रंगा, लेकिन आज तुम अपनी ही जान बचाने के मामले में फंस गये हो हा हा हा !

शिकारियों की भांति टूट पड़े भेड़िये / सैकड़ो गोलिया झपट पड़ी उन पेटियो की ओर–

किल हिम ! KILL HIM ! HA HA HA!

झिंग झिंग झिंग

रट टां टां टां टां

झिंग बेंग झिंग बेंग

रट रट रट

धुक्क धुक्क धुक्क

हर तरफ फैल गयी बारुदी दुर्गन्ध ! किन्तु गोलियों की कानफोड़ आवाजों के अलावा वह आवाज न गूंजी... जिसकी अपेक्षा की जाती है, सैकड़ो गोलियों की आवाजो के साथ चीख की आवाज

गरज पड़ा नकाबपोश /

वह पेटियो में नही है, बेवकूफो ! अगर होता तो इतनी गोलियां बरसने के बाद उसकी एक चीख जरुर गूंजती।

??

!!

?!

पेटियों मे से कहां गायब हो गया रंगा ?

मुझे तो लगता है कि किसी गोली ने उसकी आवाज भी गले में ही घोंट दी है।

किसी की भी निगाह न थी उस नन्हें से कीड़े पर, जो पेटियों में हुई खलबली से घबराकर भाग निकला।

और अपनी जिन्दगी में इससे बड़ा हैरत अंगेज कारनामा कभी न देखा था सी० आई० ए० के उस खुर्राट एजेन्ट ने।

पेटियों के बीच से कहां गायब हो गया रंगा ?

बॉस ! वह कोई जादूगर होगा !

शट अप !

वह हमारे कई रहस्य जान गया है। अगर वह न मिला तो हम हिन्दुस्तान से बाहर नहीं निकल पायेंगे। उफ़ !

ढूंढो उसे ! वह यहीं कहीं होगा और यहां से उसकी लाश ही बाहर जानी चाहिये।

लेकिन पेटियों की ओर से उसे किसी ने कहीं जाते हुये नहीं देखा। कहां गया रंगा !

किसी को कहीं जाने की जरुरत नहीं !

ये अचानक कहां से प्रकट हो गया ? और कितना भयानक भी !

ओह माई गॉड ! यह क्या ?

मैंने जमीन पर काकरोच देखा था !

आह!

...और अब अपनी मौत देखोगे!

भड़ाक

क्या रहस्य था रंगा में उस परिवर्तन का?

जबरदस्त शक्ति समा गयी थी जैसे उसके जिस्म में—

धाड़

उफ!

आह!

आ... ऊप..

लेकिन इतना समय अन्यों के संभलने के लिये काफी था।

फायर! फायर!

इसका क्या करें जबकि क्षणभर में ही प्रलयंकारी खिलौना उन हाथों में पहुंच जाये।

और फिर—

हा हा हा रंगा अब सिर्फ रंगा नहीं रहा।

जिंग बैंग

जिंग बैंग

जिंग बैंग

जिंग बैंग

जिंग बैंग

आह...

उफ्

ओह! आज बुलैट प्रूफ ने बचा लिया।

रंगा इतनी आसानी से हाथ आने वाली चीज नहीं है बेटे सी.आई.ए. एजेंट।

हा-हा-हा-हा...

हा

क

उफ्

धांय

ओह!

इसके रुप परिवर्तन के पीछे क्या रहस्य है?

रंगा पर किया वह वार उल्टा ही पड़ा नकाबपोश पर —

नहींऽऽ

Ankur's Upload

धन्धे में गद्दारी पसन्द नहीं है रंगा को विदेशी चूहे !

नहीं रंगा ! मैं तुम्हें माला.. माल..अह !

विदेशी चूहे ! अब रंगा के पास जो ताकत है...

...वो उसे अपराध जगत का शहंशाह बना देगी, और दौलत के पहाड़ जिसके कदम चूमेंगे !

का रा ट

अह !

रंगा के शक्तिशाली वार से खून उगल बैठा नकाबपोश !

और फिर ट्रक की ओर बढ़ते हुये अचानक—

ट्रक की ड्राइविंग सीट पर मंडराया वह काकरोच —

और—

हिन्दुस्तान इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट

भड़ाक

पेशेवर हत्यारों की दुनिया में अब एक नाम नई बुलंदियों को छुएगा...

और वह नाम होगा रंगा का हा..हा..हा !

इधर प्रोफेसर भास्कर और प्रकाश भूते की हत्याओं का समाचार जंगल में आग के समान शहर में फैल गया था।

देश ने एक नायाब वैज्ञानिक खो दिया !

हत्यारा बच नहीं सकेगा, क्योंकि उसे प्रोफेसर भास्कर की लड़की श्रीया ने रुबरु देखा है।

और उस घटना को उस वक्त तक तो बेहद सामान्य ढंग से लिया जा रहा था।

उधर साब! वो ट्रक उधर से निकला था।

ओह!

इंस्पेक्टर काले आ पहुंचा था उस टैम्पो चालक की स्टेटमेंट पर –

लेकिन उस वक्त जबरदस्त मोड़ ले लिया उस घटना ने –

ओह नो! ये दस्तावेज क्या जाहिर कर रहे हैं उफ! इतना बड़ा षडयंत्र, इतने खतरनाक लोग! विदेशी एजेन्ट!

विशेषज्ञों की टीम को पहुंचते देर न लगी थी।

अब जुड़ रही थी कुछ कड़ियां –

उफ! कार की ड्राइविंग सीट पर मरे हुए काक्रोच के जिस्म पर रेडियोधर्मिता का जबरदस्त प्रभाव है!

बुद्धि के सभी बल्ब एक साथ रोशन हो उठे थे इंस्पेक्टर काले के –

और प्रोफेसर भास्कर की प्रयोगशाला में आज ही रेडियो एक्टिव ब्लास्ट हुआ है...

यानी ये कॉक्रोच हत्यारे के साथ ही यहां पहुंचा है...

इसका मतलब हत्यारा इनमें से ही कोई विदेशी एजेन्टों में से एक है। लेकिन फिर इतनी हत्याएं किसने की?

और कौन था वो? जो ट्रक ले फरार हुआ है। निसन्देह! इ सबका हत्यारा

ट्रक की तलाश में जबरदस्त नाकेबन्दी की गई शहर में –

करोलबाग

बस अड्डा

एयरपोर्ट

रेलवे स्टेशन

विशेष रुप से ट्रकों की चैकिंग का हुक्म है।

STOP

और इधर श्रीयां भास्कर को तुरन्त हत्यारे की शिनाख्त के लिये 'मोर्चरी' में लाया गया

ओह!

और मुझे खुशी हुई कि हत्यारा मुझे दिखाई गयी इन विदेशी एजेन्टों की लाशों में कोई नहीं है।

नहीं! ये भी नहीं है पापा का हत्यारा!

इसका मतलब वही प्रोफेसर साहब का भी हत्यारा है, जो ट्रक में फरार हुआ है।

हत्यारे की मौत मेरे हाथों होनी है। अपने हाथों से भरुंगी मैं उसके सीने में आग!

इधर घटनास्थल से उठाई गई उंगलियों के निशानों को शातिर अपराधियों की उंगलियों के निशानों से मिलान करते समय एक निशान ने चौंका दिया इंस्पेक्टर काले को ।

ओह! तो ये है हत्यारा!

क्रिन.. क्रिन

उसी व्यक्ति के हत्यारे होने की पुष्टि की उस फोन ने –

यस सर! ट्रक संजय नगर झुग्गी बस्ती के निकट खड़ा है।

ओह! उंगलियों के निशान देखने के बाद मुझे ट्रक के वहीं मिलने की उम्मीद थी।

मैं वहां पहुंच रहा हूं ट्रक में रखी किसी चीज को छेड़ा न जाए। और ऐसा भी न लगे कि पुलिस इस ट्रक को देख चुकी है।

शीघ्रता के साथ पलटा ही था इंस्पेक्टर कि-

अरे श्रीया तुम! आओ।

मैं एक महत्वपूर्ण वस्तु आपके हवाले करने आई हूं जिसकी सुरक्षा आपका कर्तव्य है।

इसमें एक माइक्रो फिल्म है, जिसमें पापा की हत्या से पहले तक की सफलताओं की सभी गतिविधियां मौजूद हैं।

ओह!

किन्तु इस समय मुझे शीघ्र ही संजय नगर झुग्गी बस्ती पहुंचना है शायद आज तुम्हारे पापा का हत्यारा मेरे हाथों से नहीं बचेगा।

?

फिर आनन-फानन में ही घेर लिया गया संजय नगर की झुग्गी बस्ती को –

और वह जगह रंगा की चाल के नाम से मशहूर थी, जहां इंस्पेक्टर काले ने सर्वप्रथम धावा बोला।

इस चाल से कोई परिन्दा भी मेरी इजाजत के बिना कहीं जाने न पाये।

एक झटके के साथ भीतर प्रवेश करते ही उछल पड़ा इंस्पेक्टर –

ओह नो!

उफ! बम फटने में केवल पांच सैकिंड बचे हैं।

भागो! बम फटने वाला है।

भागो!

भीषण विस्फोट से थर्रा उठी पूरी चाल।

बड़ाम

और फिर नानावती अस्पताल में-

मुझे अफ़सोस है क्षीया कि मैं रंगा को जीवित गिरफ्तार नहीं कर सका। रंगा ही तुम्हारे पिता का हत्यारा था।

यह केस अभी खत्म नहीं हुआ है इंस्पेक्टर साहब...

... क्योंकि अभी रंगा का हत्यारा जीवित है।...

... और जब तक मुझे इन प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल जाते, मेरी निगाहों में यह केस खत्म नहीं होगा इंस्पेक्टर!

...अभी यह प्रश्न जीवित है कि रंगा को इतनी भयानक मौत क्यों दी गयी, जिससे कि उसके जिस्म की धज्जियां उड़ जायें।...

प्रोफेसर भास्कर के हत्यारे की मौत का समाचार बड़ी-बड़ी सुर्खियों में छापा गया।

पंजाब केसरी
प्रोफेसर भास्कर के हत्यारे की बम विस्फोट में मौ

सांध्य टाइम्स

दैनिक जागरण
प्रोफेसर भास्कर की हत्या के चार घण्टे के भीतर हत्यारे की बम से उड़ाकर हत्या

राज टाइम्स
प्रोफेसर भास्कर का हत्यारा बम विस्फोट में मारा गया

तान

वह समाचार पढ़ते हुये कहीं गूंज रहे थे अट्टाहास।

हा हा हा हा! हत्यारे की बम से उड़ाकर हत्या

यानी... हा हा हा!

हिन्दुस्

...यानी रंगा की हत्या!

लोमड़ सी जबरदस्त चमक थी उसकी आंखों में।

और चेहरे पर थी बगुले सी मक्कारी-

अब केवल वह काम और बाकी है। और उसके बाद...!

लेकिन वह काम भी इतना सरल नहीं!

पर उसे करना तो होगा ही हर हाल में अन्यथा रंगा की हत्या का उद्देश्य पूरा न होगा।

सुनसान गली,! घोर अन्धेरा! शरीफ लोग और उचक्के।

निकालो जो कुछ है बाहर!

चार के बीच बहादुरी?

कॉलेज टाइम में मैं जूडो का चैम्पियन होता था!

बिल्ला के आदमी पर अपनी जूड़ो गिरी दिखाता है! चक्कू तो अब तुझे पड़े हीं पड़े!

नहीं! रुक जाओ! उन्हें कुछ मत कहो प्लीज!

बिल्ला का चाकू तो ठीक वक्त पर ही नीचे आया था, लेकिन, जाको राखे साइयां, मार सके न कोय!

?

आह..!

लिज लिजी सी उस जीभ ने चाकू की दिशा को क्षण भर में परिवर्तित कर दिया था।

किसी के मुंह से बोल तक नहीं फूटा। केवल महान आश्चर्य से खुली थी आंखें—

थड़

उह!

आह!

ग्लाSS

तीन तो वहीं टैं बोल गए थे।

चौथा रह गया बिल्ला! एक खूंखार मुद्रा में –

जिस पर चक्कू न चले, उस पर गोली तो चले ही चले!

बिल्ला के हाथ में चमक उठा देसी कट्टा!

बोलने में इतना समय क्यों लगाया रे बिल्ला? गोली क्यों न चलाई?

धिक् धिक्

अरे!

नटनी की तरह लहराया वो जिस्म –

आह!

कड़ाक

धांय धांय धांय

सनसनीखेज दृश्य था।

छलावे के समान ही उस जिस्म के पीछे दिखाई पड़ी वह रहस्यमय किरदार भी—

छलावा युवती की उस जबरदस्त ठोकर ने संभलने न दिया था बिल्ला को।

टोंक

झूऽऽऽम

आह..

फुर्ती से भी दो कदम पीछे छोड़ कर प्रतिद्वन्दी ने इसबार फैंका 'अपना' पासा—

थ..पा..क

हम्फ

और पीछे उछाल फैंका उस छलावा युवती को।

इस घटना से स्तब्ध लोगो के मुंह से आश्चर्य के साथ चीखें फूट पडीं—

उफ! दीवार से कैसे जा चिपकी?

थम्प

छिपकली है क्या?

हां, मैं हूं लिज़ा!

- कौन है लिज़ा?
- कौन था रंगा का हत्यारा?
- रंगा की हत्या से अपना कौन सा उद्देश्य पूरा करना चाहता था वो? इन सब रहस्य प्रधान प्रश्नों का भई सीधा सा जवाब है~ छिपकली

क्रमशः

UPloaded for RFN Community